International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-06-2021, Accepted: 30-06-2021, Published: 16-07-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 24-28

समकालीन हिन्दी कहानी में चित्रित भारतीय सामाजिक असमानता और उसमें तकनीक की प्रभाविता

संजीव कुमार ए

पी.एच.डी शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम, केरल, भारत

सारांश

सामाजिक असमानता हर देश का एक अन्तर्निहित सच्चाई है। समकालीन कहानी का उद्देश्य अक्सर यथार्थ को उसकी पूर्ण भयावहता और नग्नता में प्रस्तुत करने का है। इस तरह कहानियाँ भारत के पूर्वनिर्धारित असमानताओं का भी उल्लेख करती हैं। यहाँ एक विषय बहुत गंभीर होता है कि भारतीय सामजिक वर्गभेद जैसे धर्म, जाति, वर्ग, अर्थ, उम्र, अभिगम्यता आदि पर विभेद हुए समाज में तकनीक एवं वैज्ञानिक माध्यम कोई बदलाव लाने में सक्षम हुआ है या नहीं? 'डिजिटल भारत' की संकल्पना में समायी हुई भारत के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में तकनीक की प्रभाविता को परखना यहाँ का प्रमुख उद्देश्य है। कथाओं में चित्रित सामाजिक वर्गभेद के अनुसार विज्ञान का असर देखने की कोशिश किया गया है। प्रस्तुत सामाजिक असमानता जैसे जाति, वर्ग, क्षेत्र, उम्र, अभिगम्यता आदि के स्तर पर विज्ञान एक सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम हुआ है लेकिन प्रत्येक विभेदों में होनेवाले कमियों को सुधारना भारत की प्रगति केलिए अनिवार्य साबित होता है।

मूल शब्द: विभेद, अभिगम्यता, असमता/असमानता, सत्ता समीकरण, वर्ग (Class)

प्रस्तावना

सामाजिक संसाधनों का समतुल्य अभिगम्यता न होने की स्थिति को सामाजिक असमता कहा जाता है। बोर्डियु के अनुसार "सामाजिक संसाधन को तीन संपत्ति के रूप में विभाजित कर सकते हैं- आर्थिक संपत्ति के रूप में भौतिक संपत्ति और आय, सांस्कृतिक संपत्ति के रूप में शैक्षिक योग्यता एवं सामाजिक दर्जा और सामाजिक संपत्ति के रूप में सामाजिक संबंध एवं संपर्क तंत्र।"[1] भारतीय सन्दर्भ में धर्म, जाति, वर्ग, आयु, अर्थ, अभिगम्यता आदि पर वर्ग भेद किया जाता है। आज विज्ञान समाज में व्याप्त इन्हीं असमानताओं में परिवर्तन लाने का एक वस्तु तत्व बन गया है। इक्कीसवीं सदी का भारत तकनीकी संभावनाओं की नव गूँज से आकांक्षाओं की नई राह तैर कर रहा है। वैज्ञानिक संभावनाओं से आज देश के विविध कार्य क्षेत्र फलफूल रहे हैं, जिसका असर वास्तव में समाज के हर एक नागरिक को सामान्य रूप से प्रगति की ओर ले चलता है।

भारत 2015 से 'डिजिटल भारत' की नव संकल्पना के आधार पर अपनी नई रूह आज़माया है। इसके सिरे से विविध पद्धतियाँ जैसे जनधन योजना, भारत नेट, डिजी लॉकर आदि सरकार

चलाता आ रहा है। 2020 के कोरोना महामारी के इस अवसर से विज्ञान की भागीदारी समाज के हर एक क्षेत्र में दुगुनी तिगुनी बढ़ गयी है। प्रत्येक जीवन की हर एक साधारण कार्य तकनीक और विज्ञान के सहारे ही चलता है। अब समाज एक स्पर्शहीन, अदृश्य, दूर से काम को परिसंचालित और प्रबंधित करनेवाला बन गया है, जहाँ विज्ञान एक अहम हिस्सा है। यहाँ मुख्य रूप से एक प्रश्न उठता है कि भारत जैसे देश जो विविध तरह के सामाजिक भेदभाव या असमानता जैसे जाति, धर्म, उम्र, क्षेत्र विशेष, तकनीक की अभिगम्यता, आदि से पीड़ित है, वहाँ तकनीक या विज्ञान क्या एक सकारात्मक प्रभाव से समाज में समता ला सकता है या नहीं? इस अवस्था में भारत की सामाजिक असमानता में विज्ञान की भूमिका को आंकना महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्य के समकालीन कहानीकारों के कुछ चुनिन्दे रचनाओं में निम्नलिखित असमानताओं का उल्लेख दृष्टिगत है।

1. जातिगत असमता

भारत के परिप्रेक्ष्य से देखा जाये तो जाति समूह की रूढी पद्धति में 'उच्च' जाति वर्ग जैसे ब्राह्मण, पंडित आदि सदियों से सत्ता समीकरण के सर्वत्र ऊंचे स्थान के दावेदार रहे हैं । आज तकनीक की सहायता से यह आशा का संकेत है कि उत्पीडित जाति जैसे चमार, जुलाहा आदि वर्ग के लोग अपने पूर्वगत स्थिति में सुधार ला सकते हैं। आज के समय में इस तरह के पुश्तैनी काम नवयुवक तकनीक के सहारे उपलब्ध कराते हैं और प्रबल जाति लोग भी इसकी सेवा लेते हैं। सेवा प्राप्त करने केलिए जाति निरपेक्ष सभी को तकनीक की सहायता उपलब्ध करना पड़ता है। इसका मतलब तकनीक में निपुण उत्पीडित जाति के लोग भी समाज में सशक्त बन सकते हैं। 'एस.आर हरनोट' की कहानी 'एम्.डॉट.कॉम' में एक दृष्टांग है कि एक पुश्तैनी चमार का बेटा 'महेंद्र' अपने काम को कंप्यूटरीकृत किया है। इस प्रक्रिया के बारे में बुद्धराम माँ को समझाता है "जब कोई पशु मरता है या पैदा होता है, इसमें दर्ज हो जाता है। फीस लगती है उसकी। अगर तेरा नाम होता मिनट में ई-मेल करके महेंद्र शहर से दो-चार आदमियों को बुला देता और शाम तक तेरी भैंस ओबरे से बाहर।"[2] आज कम्प्यूटर के डेटाबेस के सहारे पशुओं और उनके मालिकों का नाम छांटता है । यह तकनीकी प्रविधि उसे अपने सामाजिक परितंत्र में एक प्रभुत्व दिलाता है। यह आज के तकनीक का एक फायदेमंद दृष्टिकोण है जो जातिगत असमता को कम करने का एक प्रस्थान बिन्दु बन सकता है।

2. वर्गीय असमता

भारतीय समाज में परम्परागत तरीके से विविध तरह का वर्ग विभाजन और इस वर्गधारा से संबंधित आचार व्यवहार संहिता, सभ्यता, स्वभाव की कुशलता आदि सदियों से पालता आ रहा है। आज के वैज्ञानिक युग में इस तरह के वर्ग भेद की भ्रंशरेखा कुछ ढीला हो रहा है। समकालीन कहानीकार 'पंकज मित्र' की कहानी 'टी.वी युग की महरी' में मिसेज़ मेहरा अपने घर केलिए एक महरी की तलाश में है। वो अपनी शर्तें उनसे रखती है और अंत में महरी खुद मिसेज़ मेहरा से अपनेलिए हर सप्ताह में टी.वी पर एक कार्यक्रम देखने की शर्त लगाती है और कलर टी.वी की उपलब्धिता पूछती है। घर में टी.वी नहीं सुनते ही वो काम करने से मना कर देती है। "चाहे तीन सौ दे दो, पर कलर टीवी से नीचे अपने को कुछ नहीं पूरता।"[3], महरी 'गंगाबाई' 'मिजेस मेहरा' से कहती है।

वैज्ञानिक संभावनाओं और विकास से आज के समय में साधारण माँग और असाधारण माँग की दृष्टिकोण में बदलाव आ गया है। यहाँ तकनीकी

प्रगति समाज के नीचे पायदान में खड़े लोगों को एक अधिकार स्तर उपलब्ध किया है। प्रस्तुत सन्दर्भ में मालिक-नौकर के संवाद की आचारसंहिता में ही एक परिवर्तन दिखता है। जो मांग उच्च वर्ग को असाधारण लगता है, वो समाज के पूर्वनिर्धारित पक्षपात से उपजा है। लेकिन निम्न वर्ग आज इन्हीं मांगों को साधारण आवश्यकता के रूप में सौदा करने की दावा रखते हैं। वैज्ञानिक प्रगति से चालित भारत के नगरों और महानगरों की तेज़ी ज़िंदगी वास्तव में इस असमता को मिटाने में मददगार हो रही है। यह वास्तव में जनता को पूर्वगत रूढी पद्धति से आज़ाद कर रहा है।

3. क्षेत्रीय असमता

भारत में क्षेत्रीय तौर पर ग्राम, शहर या नगर, महानगर ऐसे तीन भेद होते हैं। समाज में प्रस्तुत क्षेत्र विशेष के असमता का आधार प्रति व्यक्ति आय, औद्योगिक विकास, शिक्षा, रोज़गार, रहन-सहन का स्तर आदि में व्यक्त है। आज के समय में वैज्ञानिक प्रगति की विशेषता के अनुसार ग्रामीण एवं कस्बे इलाकों के लोगों में अपने रोज़ाना ज़िंदगी या नौकरी पेशा में उसका असर दिखता है या नहीं यह एक महत्त्वपूर्ण बात है। कस्बाई इलाकों में भी जनता की प्राथमिक आवश्यकताओं की जगह में वैज्ञानिक आबोहवा फैल चुका है।

'पंकज मित्र' की कहानी 'फेसबुक मेन्स पार्लर' में नायक 'कैंची' 'फेसबुक' शब्द अपने दुकान के साथ जोड़ता है। साथ ही 'सलून' को 'पार्लर' में 'रीब्रांड' किया है। 'फेसबुक' शब्द रखने का कारण भी वह व्यक्त करता है कि दुकान में आजकल आनेवाले विशेष रूप से युवा ग्राहक आज इसी नाम से ताल्लुक रखता है। रेट बदलने की ताना की प्रतिक्रया के रूप में वह कहता है कि "पार्लर और सलून का रेट एक थोड़े होगा।"[4] यहाँ कस्बाई और ग्रामीण स्तर में भी लोगों में विज्ञान के साथ जुड़कर अपने रहन-सहन में बदलाव लाने की नई आशा और महत्त्वाकांक्षा नज़र आता है। वैज्ञानिक प्रगति में शामिल होकर अपनी असमानता को पीछे छोड़कर अपने काम की वास्तविक भाव समझने में वह सफल होता है। इसलिए भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी बहिर्गमन क्षेत्रीय असमता को दूर करने का एक महत्त्वपूर्ण घटक माना जा सकता है।

4. आयु का अंतर

वैज्ञानिक प्रगति के वातावरण में पलते भारत में आज ऑनलाइन माध्यम या तकनीकी प्रविधि युवक वर्ग का मात्र माध्यम नहीं होता है बुजुर्गों एवं अधेड़पन के उम्रवाले लोगों का भी एक सार्वजनिक माध्यम बन गया है। वे आज के नये सामजिक माध्यम और तकनीकी एप्स से ज़िंदगी जीने की नयी कौशल स्वायत्त करने की कोशिश में हैं। विशेष रूप से 'सोशिअल मीडिया' ख़बर जानने, नाते रिश्ते के साथ संबंध रखने, सामजिक संबंध स्थापना आदि का माध्यम बन गया है। आज यह एक तरह से व्यक्ति का कर्मक्षेत्र के अभिन्न अंग तक बन गया है।

'दयानंद पाण्डेय' की कहानी 'फेसबुक में फँसे चेहरे' का नायक 'राम सिंगार' हर दिन फेसबुक के साथ विभिन्न लोगों के साथ चैट्स और दोस्ती संबंधी बनाने में सक्षम होता है। प्रतिदिन लोगों द्वारा डाले हुए पोस्ट, जानकारियाँ, खबर आदि पढता रहता है। वास्तव में ऐसा माध्यम युवक वर्ग और उससे जुड़ी वारदात और उनके दुनिया के बीच का एक महत्त्वपूर्ण सेतु है। इसलिए ऑनलाइन सामाजिक माध्यम और मोबाइल एप्स इस असमता को दूर करने में एक मुख्य भूमिका निभा रहा है।

लेकिन अक्सर अधेड़पन और वरिष्ठ वर्गों के लोगों में वैज्ञानिक उपकरण और माध्यमों के उपयोग में ढील होता दिखता है। उन्हें वैज्ञानिक तकनीक को उपयोग करने की कुशलता कम ही दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत कहानी में राम सिंगार का वक्तव्य है "आखिर पचास-पचपन के फेंटे में आने के बाद टेक्नीक से दोस्ती बहुधा कम ही लोग कर पाते हैं। ज़्यादातर नहीं कर पाते। मेल एकाउंट खोलना हो, फेसबुक एकाउंट खोलना हो, कुछ पोस्ट करना हो, अटैच, कॉपी, पेस्ट वह सब कुछ बच्चों के भरोसे करते-कराते हैं। छोटा बेटा इसमें ज्यादा मददगार साबित होता है।"[5] उम्र की द्रष्टि से देखा जाये तो ऐसे लोगों को भी शामिल करना वैज्ञानिक प्रगति केलिए अवश्य है। तकनीकी उपकरण और सामजिक माध्यम को उम्र के हिसाब से आसानजन्य बनाना है ताकि और लोग इसके सेवा उपलब्ध करा सके।

5. अभिगम्यता का विभेद

आज के समय के ज़िंदगी में वैज्ञानिक सुविधा और सेवा उपलब्ध करना एक महत्त्वपूर्ण घटक बन गया है। भारतीय सन्दर्भ में यह उम्मीद करना गलत होगा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र की दुनिया के साथ हर नागरिक को अभिगम्यता है। इसलिए आज के समय में एक वर्गभेद की सजीव चर्चा समाज की वैज्ञानिक माहोल में अतिमहत्त्वपूर्ण होता है, 'डिजिटल साक्षर' और 'डिजिटल निरक्षर'। भारतीय समाज में इस वर्गभेद तकनीकी प्रगति को अवरुद्ध करता है। इसका एक नज़ारा 'एस.आर हरनोट' की कहानी 'एम्.डॉट.कॉम' में साफ़ दृष्टिगत होता है। यहाँ मुख्य पात्र 'माँ' अपने गाँव से शहर तक आकर अपनी पुश्तैनी चमार के बेटे 'महेंद्र' के दुकान में जाती है। आज के वैज्ञानिक समय में वो अपने व्यापार इलेक्ट्रोनिक मार्ग से करते दिखता है। माँ सचमुच आज के वैज्ञानिक कार्यक्षेत्र और सेवा उपलब्ध करने की रीति देखकर चकित होती है। महेंद्र के डेटाबेस में माँ का नाम नहीं मिलता है। इस समय उसका वक्तव्य है "माताजी आपका नाम हमारे पास नहीं है। न ही पशुओं की लिस्ट।"[6] कहानी की माँ भारतीय जनता के 'डिजिटल निरक्षर' लोगों को प्रतिनिधित्व करती है। इक्कीसवीं सदी के भारत में वैज्ञानिक साक्षरता बढाने और डिजिटल एप्लीकेशन और सेवाओं के निर्माण और उपयोगिता में इन्हीं लोगों की अपंगता को भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

आज के समय में ज़्यादातर लोग डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ओर नई तकनीकी क्षेत्रों की सहायता से अपनी ज़िंदगी की दिशा और दशा बदलने की होड में है। उन्हें नया कर्मक्षेत्र डिजिटल और वैज्ञानिक दुनिया के बल पर मिलने की संभावना है। सेवाओं के आदान प्रदान और नई योजनाओं को पंख देने में विज्ञान व तकनीकी उपकरण और माध्यम का भाग महत्वपूर्ण है। आज दुनिया कोरोना महामारी की पकड़ में आ चुका है। इस समय में सम्पूर्ण बुनियादी कार्यविधि जैसे शिक्षा, नौकरी, खरीद-फरोख्त, आपसी बातचीत, काम का प्रबंधन सब तकनीकी सुविधाओं की मार्ग से चलते हैं। आज वैज्ञानिक माध्यम का उपयोग करना ज़िंदगी में एक विकल्प की अपेक्षा आवश्यकता बनता जा रहा है। ऐसे अवसर पर भारतीय सामाजिक सन्दर्भ में व्याप्त वैज्ञानिक क्षेत्र विस्तार पूर्वगत असमानता में एक छोटा सा भी परिवर्तन लाने में सक्षम होता है या नहीं यह परखना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह भविष्य भारत की वैज्ञानिक प्रगति के दिशा निर्देशन में सहायक साबित होगा।

समकालीन हिन्दी कहानीकारों की चुनिन्दा कहानियों में होनेवाले वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य समूचे समाज के वैज्ञानिक परिदृश्य का एक नमूना है।

भारतीय समाज के सन्दर्भ में सामाजिक असमानता एक छोटा प्रश्न नहीं है। इसके आधार पर यह साफ़ रूप से दिखता है कि प्रस्तुत वैज्ञानिक तकनीकी दुनिया समाज में व्याप्त असमानता के स्थापित विभेदों में एक सकारात्मक प्रभाव डालने में सफल हुआ है लेकिन इन्हीं वर्गभेदों में वैज्ञानिक प्रगति को अवरुद्ध करनेवाले कमियों में सुधार लाना आवश्यक है। यह वैज्ञानिक रूपसंरचना की योजना से लेकर समाज में इसकी समग्रता, अभिगम्यता, सुगमता, क्षेत्र विस्तार आदि तक जाता है। इससे यह तो साबित होता है कि वैज्ञानिक प्रभाविता की शुरुआत अच्छी है लेकिन चुनौतियाँ अधिक हैं। नये 'डिजिटल' भारत की रूपसंकल्पना को इन चुनौतोयों से अवगत करना अवश्य है ताकि सामाजिक असमानताएँ कम हो न बढे।

संदर्भ सूची

1. एन.सी.आर.टी, क्लास 12 सोशियोलॉजी, पृ.84
2. एस.आर हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पृ.48
3. पंकज मित्र, बाशिंदा @ तीसरी दुनिया, राजकमल प्रकाशन, पृ.17
4. पंकज मित्र, बाशिन्दा @ तीसरी दुनिया, राजकमल प्रकाशन, पृ.60
5. दयानंद पाण्डेय, फेसबुक में फँसे चहरे, जनवाणी प्रकाशन, पृ. 35
6. एस.आर. हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पृ.48